of all industrial sectors covering thousands of commercial products. Petrochemicals constitute a very important segment of world chemicals market, with a share of nearly 40percent. The industry is important as it has several linkages with other industries in petroleum refining, natural gas processing and forward linkages with industries that deal in a variety of downstream products.

Without chemical industry, there would be no electronics or microelectronics, refrigerators, recording tapes, automobiles, laser discs, super magnets, processed foods and virtually all consumer products etc. even the power industry depends on the chemical industry for its operations. The use of chemicals (ion exchange resins) becomes indispensable for removing dissolved salts needs in boilers and other application. In gold mining, cyanide solution is used for extracting gold. The crude oil refining process uses chemicals, catalysts, heat, and pressure to separate and combine the basic types of hydrocarbon molecules naturally found in crude oil into groups of similar molecules.

Reference

1 Bakul H. Dholakia and Ravindra H. Dholakia.(1999) "Total factor productivity Growth in Indian manufacturing". EPW Vol.29, No. 53 December 1994. Pp. 3342-3344.

2 Balakrishnan p. and K.Pushpangadan. (1995) "Total factor productivity growth in Manufacturing industry." EPW. March 1995. Pp. 462-464

3 Chemical industries Accessed at www.en.wikiepedia.org/wiki/chemical-industry). Accessed on 3rd January 2015

बिहार की फल्गु नदी : एक भौगोलिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन

डॉ० महेन्द्र यादव*

चिन्तन–मनन आचार, स्वधर्म सेवन, विविध कलाएँ और विधा तथा ज्ञान विज्ञान के विधाएँ तथा ज्ञान–विज्ञान के समन्वय से जो अहर्निश आत्मा का कर्षण होता है तथा उससे जो श्वेत पुष्प खिलता है, उसी का नाम संस्कृति है। आचार और स्वधर्म–सेवन में ही करूणा, मैत्री, शान्ति, अहिंसा, अपरिग्रह, सम्यक जीविका पर सेवा आदि धर्म सन्हित हैं, जो आत्मा के सात्विक रूप हैं। ऐसी संस्कृति के निर्माण में जहाँ विविध शास्त्रों के ज्ञान, तप, कर्म, सामाजिक–परिवेश, सत्पुरूषों के संग आदि कारण होते हैं, वहीं हमारे पास की भूमि पर्वत, अरण्य एवं स्त्रोत–सरिताएँ भी कारण बनते हैं। ये प्राकृतिक ऐश्वर्य मनुष्य के अभिन्न सामाजिक अंग हैं, अतरू ये हमारे हृदय, स्वभाव, ऊर्जा एवं ज्ञान–चश्षु को सर्वदा प्रभावित करते रहते हैं, जिससे हमारी संस्कृति ढलती है।

बिहार राज्य के लोक–जीवन का भी मूलाधर "गंगा" नदी है, जो ठीक सुषुम्णा की तरह, बिहार राज्य को दो भागों में विभक्त कर, जीवन, यौवन और स्पन्दन प्रदान करती रहती है। गंगा नदीके अतिरिक्त जिन नदियों के पवित्र जल से बिहार राज्य की संस्कृति ढली है, उनमें फल्गु (सुमागध) भी महत्वपूर्ण है। फल्गु "निरंजना" और "मोहना" नदियों के संगम से बनती है। फल्गु का एक नाम 'सुमागधा' भी है। इसके श्सुमागधाश कहलाने का कारण यह था कि अति प्राचीन काल में इसे इसकी छिन्ने–भिन्न करके इसके जल से सम्पूर्ण मगध क्षेत्र को शस्य–सम्पन्न और हरा–भरा किया गया था।इसकी छिन्न–भिन्न धाराओं से जो कई नदियाँ बनती हैं, उसके नाम हैं–महाने, नोनई, बगही, करदुआ, मरही, लोकैन, धेबा, जलवार, डोंड, सूंड, बलदहा, महतमैन, भुतही, कठौतिया।

अध्ययन का उद्देश्यः–फल्गु नदी के भौगोलिक परिदृश्य को प्रस्तुत करते हुए इसके ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक पहलुओं पर विशेष रूप से अध्ययन कर इसकी महत्ता को बताना।

विवरणात्मक पहलु :–फल्गु की छिन्न–भिन्न धाराओं से बनी इन सभी नदियों से पुराकाल में और आज भी मगध के खेत आबाद होते थे और होते हैं। इन

***राम जन्म राय डीग्री महाविद्यालय अलोनी, गड़खा सारण (छपरा)**

छिन्न–भिन्न धारा–मार्गों के किनारे भी कई सांस्तिक आश्रम और मन्दिर बने थे। अतरू फल्गु का नाम "सुमागधा'' विश्रुत था, जिसने इस पृथ्वी पर मगधों को विख्यात किया था – सुमागधा नदी रम्या मागधन विश्रुता भुवि"।

जैसा कि लीलाजन (निरंजना) और "महानदी'' (मोहना) के संगम के बाद संयुक्त घारा का नाम फल्गु होता है। अतः "लीलापन'' और 'मोहना' के बारे में झारखंड राज्य के कुछ संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है–लीलाजन नदी हजारीबाग जिले के पश्चिमी भाग में स्थित "सिमरिया'' की आधिपत्या भूमि के कई स्त्रोत समूह से प्रकट होती है। सिमरिया हजारीबाग नगर से किंचित पश्चिमोत्तर कोण में 28 मील दूर है और "चतरा'' नामक अनुमंडल नगर से 3 मील दूर सीधे दक्षिण दिशा में स्थित हैं। लीलाजन (निरंजना) नदी, सिमरिया के पूर्व में ही नदी का रूप स्थिर श्करके पहले पश्चिम में चलकर है और सिमरिया चतरा मार्ग को पार करके फिर उत्तर में मुड़ती है। इसी उत्तर वाही प्रवाह के द्वारा यह "बन्दारू'' पहुँचती है, जहाँ लीलाजन का "खाया बन्दारू'' एक गहरा खात है। यह 'खात' संसार के अद्भुत खातों में से एक है। यहाँ लीलाजन नदी शुद्ध पहाड़ को काटती है और एक गहरा दर्रा द्वार पहाड़ को चीरकर बनाती है। इस जगह नदी पहले एक मनमोहक प्रपात बनाती है और यह प्रपात तथा कटाव चतरा से पाँच मील दूर नेत्रहत्य कोण में बालूपाथा जाने वाली सड़क से एक मील दूर पश्चिमोत्तर कोण वाले घने अरण्य में है।

लीलाजन झारखंड प्रदेश के हजारीबाग जिले की भूमि पार कर जब गया जिले की भूमि में आती है, तब सबसे पहले प्रसिद्ध सांस्तिक स्थल "बोध गया'' पहुँचती है द्य बोध गया ठीक इसके बाएं तट पर स्थित है और यहीं इसके दाहिने तट पर 'धर्मारिण्य' क्षेत्र है। धर्मारण्य का सांस्कृतिक महत्व "बोध गया'' से भी प्राचीन है। बोध गया का पुराना नाम "उरूविल्व" अथवा "उरूबेला" था, जो आज ध्वंसावशेष रूप में "उरेल'' कहलाता है। यहीं निरंजना के एक घाट का नाम "सुप्रतिष्ठत'' तीर्थ, था।

जहाँ भगवान बुद्ध से पहले एक सौ सहत्त्र बोधिसत्वों ने निरंजना में स्नान कर मोक्ष प्राप्त किया था। हीं निरंजना की तटभूमि में वह वजभूमि है, जहाँ पीपल वृक्ष के नीचे ज्ञान–प्राप्ति के लिए तथागत ने अपना व्रजासन लगाया था।

निरंजना नदी बोध गया से केवल एक मील उत्तर में आकर अपनी सखी "मोहनाश से संगम करती है और अपना नाम लुप्त कर "फल्गु'' कहलाती है। मोहना झारखंड राज्य के हजारीबाग जिले में "मोहनीश नाम से जानी जाती है । इसका उद्गम स्थल हजारीबाग से पश्चिम दिशा में शसिलाश नामक गॉव की ऊँची पर्वतीय भूमि में है, जो 'व्यतकमसंडी' अंचल में है। कई स्त्रोत समूहों से मोहनी एक नदी

का रूप लेती है, जिसके बनने में "चकोराश और श्बल–वलश निर्झरिणियों के स्त्रोत मुख्य हैं। फिर यह मरांगी गडही, निरी, बसनी, बरबाइ आदि नदियों का जल समेटती हुई हजारीबाग में 36 मील तक बहती है। यहाँ 490 वर्ग मील भूमि का बरसाती जल उदरस्थ करती है। तब "मोहनाश नाम से गया जिले में दौड़ने लगती है मोहना–निरंजना का संगम बोध गया अंचल में ही होता है और संगम–स्थान से ऊपर (दक्षिण) दोनों नदियों की दो मील की दोआब भूमि "धर्मारिण्य'' क्षेत्र कहलाता है। यहाँ मोहना नदी का नाम ''महानदी" तथा "सरस्वती'' नदी भी कहा गया है। "धर्मारण्य क्षेत्र" सम्पूर्ण भारत के अति प्राचीन सांस्कृतिक केन्द्रों में से अन्यतम है। पुराकाल में यहाँ समस्त पूर्वी भारत की संस्कृति ढली है और प्राचीन वैदिक धर्म व्यवस्थित किया गया है।

कोश ग्रंथों में फल्गु का अर्थ रिक्त या शून्य मिलता है, किन्तु यहाँ श्फल्गुश का अर्थ है–'फलं दाति च फल्गु'–अर्थात जो फल दे, वह फल्गु है। अतरू गया की फल्गु नदी में पिण्डदान का अर्थ होता है सुफल प्राप्त करना द्य संगम के बाद जहाँ इसका नाम "फल्गु'' पड़ता है, इसके दाहिने तट पर "गजास'' की पहाड़ी है, जिस पहाड़ी पर लगभग पाँच वर्षो तक सिंद्धार्थ गौतम ने तपस्या की थी।

इसी गजास पहाड़ी को श्प्राग्पोधिश पर्वत भी कहा जाता है। इसी का तीसरा नाम मुरा पहाड़ी भी है। किन्तु हाड़ी के मध्य भाग का नाम "डोंगरा पहाड़" है। इसी डोंगरा पर डुगेश्वरी देवी की वह अष्ठादशगुनी मुर्ति थी, जो बाद में बोध गया के संन्यासी मठ में उठा लायी गयी थी। इसी पवित्र स्थान पर सिद्धार्थ ने अपनी कठिन तपस्या की थी, जहाँ षड्वर्गीय भिक्षु इनके शिष्य बने गये थे और बाद में इन्हें त्यागकर सारनाथ चले गये थे। इस स्थान को देखने चीनी यात्री हवेनसांग यहाँ आया था।

यहीं फल्गु के वाम पार्श्व में "ब्रह्मयोनि'' नामक पर्वत है। ब्रह्मयोनि दो पर्वत–शिलिाओं की एक रार है, जिसमें अपने पापों से छुटकारा पाने के लिए पेट–पीठ के बल से लोग प्रवेश करके बाहर निकलते हैं। इसी का नाम गयाशीर्ष है। फल्गु तट के इस गया–तीर्थ की महिमा महाभारत के वन पर्व में बतायी यी है। इससे पता चलता है कि ब्रह्मयोनि का नाम "पविन्नकूटाश था। महाभारत में भी गया–पिण्डदान और तर्पण का महत्व प्रतिपादित है। वायुपुराण के अनुसार फल्गु नदी तट के गया नगर में ऐसा कोई स्थान, जहाँ तीर्थ नहीं हो। उसके अनुसार किसी की सन्तान गया–तीर्थ में जाए तो उसके लिए ब्रह्मज्ञान, शाला में मृत्यु तथा कुरुक्षेत्र तीर्थ का वास व्यर्थ है। इस पुराण के अनुसार गया नगर के मध्य त्रौलोक्य के सभी तीर्थ बसते हैं। गया में जिनकी भी प्रस्तर–प्रतिमाएँ भिन्न–भिन्न देवताओं के नाम से विख्यात हैं, जो देवस्वरूप उसके शरीर पर बैठे हुए हैं।

गया कहलाने वाला नगर पर्वत–खण्ड पर बसा है, जिसके दक्षिणी भाग में विष्णुपाद का मंदिर है, ल्कुल फल्गु नदी के कगार पर स्थित है। विष्णुपद का सम्पूर्ण मंदिर काले ग्रेनाइट पत्थरों को राशकर बनाया गया है, जिसे 757 ई० लगभग अहित्याबाई ने बनवाया था और इसके शिल्पी जयपुर नगर से ये गये थे। मण्डप की छत आठ कतारों में खड़े प्रस्तर–स्तंभों पर टिकी हुई है। इसकी गुम्बज एक पहाड़ी फा की आकृति में आठ पहल वाली है। मंदिर की वास्तुकला दक्षिण के कांजीवरम् मंदिर की बनावट रह है।

जिह्वालोल तीर्थ फल्गु नदी का ही एक घाट है, जहाँ पित्तरों को पिंडदान दिया जाता है। नदी के ह्मणी घाट के उत्तर में गया का प्रसिद्ध पिता–महेश्वर शिव मंदिर है, जहाँ शिवरात्रि को भक्तगण रातभर जागकर पूजा–अर्चना करते हैं। उत्तरमानस के सामने फल्गु नदी के दाहिने तट–भाग में श्रामगया तीर्थश है, जहाँ राम ने अपने पिता दशरथ की आत्मा की तृप्ति के लिए पिण्डदान किया था।

इसी जगह फल्गु नदी में सीताकुंड नामक स्थान है, जहाँ दूध–मिश्रित जल फल्गु नदी में बहता है। किन्तु अब यह तीर्थ लुप्त हो गया है। उत्तरमानस और दक्षिण मानस की सूर्य मूर्तियाँ सात घोड़ी पर सवार हैं। प्रतिमाओं की बनावट तत्कालीन शिल्प का नमूना है। गया चौक के घड़ी–घर के सामने दुःखहरणी देवी का प्रसिद्ध मंदिर फल्गु के तट पर ही खड़ा है। मंदिर भी गया का प्रसिद्ध तीर्थ है।

रामशिला पर्वत को ही 'प्रभासाद्वि' कहा जाता है, जो फल्गु नदी के वाम पार्श्व में स्थित है। वायु पुराण के अनुसार इसी स्थान पर राम–लक्ष्मण ने पित्तरों की तृप्ति के लिए तर्पण फल्गु में किया था। इसी प्रकार फल्गु नदी ने गया नगरी में युगों से जो हमारी संस्ति गढ़ी है, वह वर्णनातीत है।

रामशिला पहाड़ी के पूर्वी भाग में छह मील उत्तर में बाएँ भाग में "बराबर'' पर्वत है। सुदामा गुफा के द्वार पर उत्कीर्ण लेख में "बराबर" का नाम "प्रवरगिरि" आया है और इसी का बिगड़ा रूप "बराबर'' है। इसका शिलालेखों में श्खलतिकश आया हैद्य पंतजलि ने भी खलतिकस्य पर्वतस्यादूर भवानि खलतिंक नानि नाम से खलतिक का उल्लेख किया है। गोरथगिरि राजगृह के दक्षिणी भाग का पर्वत है, जिसके स्कन्द देश में आज भी बैलगाड़ियों के पहिये की रगड़ के चिन्ह पाए जाते हैं।

फल्गु नदी के बाएँ भाग में ही एक पहाड़ी बराबर पर्वत से हटकर "कौआ डोल'' है। यह पहाड़ी एक स्तूप की तरह खड़ी है। पूरी पहाड़ी काले और कड़ी ग्रेनाइट चट्टान की है, जिसका एक शिखर भाग ध्वज–दंड की तरह खड़ा है। यहीं पादभूमि में नालंदा के प्रसिद्ध आचार्य शीलभद्र का आश्रम था। इसी विद्यापीठ में हवेनसांग ने कुछ दिन अध्ययन किया था। आश्रम के भग्नावशेषों से पता चलता है कि तेरह मोटे–मोटे प्रस्तर–स्तम्भों पर आश्रम का बरामदा खड़ा था और आश्रम

की दिवारें प्राचीन ईटों से बनी थीं। यहाँ महिषासुर–मर्दिनी दुर्गा की एक मूर्ति थी, जो चतुर्भुजी थी। बौद्ध–प्रतिमाओं में बुद्ध, बजसत्व और प्रज्ञा पारमिता की एक–एक मूर्ति विद्यमान थी। यह आश्रम मौखरियों के शासनकाल में बना था, जो शीलभद्र आचार्य की देख–रेख में चलता था।

बराबर पर्वत के मुख्य शिखर भाग का नाम मुरली, खण्डागिरी और सिद्धेश्वर है। सिद्धेश्वर भाग उसका नाम है, जहाँ सिद्धेश्वरनाथ महादेव का मंदिर है। सिद्धेश्वरनाथ महादेव मंदिर में पूरे श्रामण एवं भादो मास में मेला लगता है। सिद्धेश्वर लिंग की स्थापना सातवीं शदी में ही किसी 'योगानन्द' नामक ह्मण ने कराई थी, जिसका अभिलेख यहाँ वापिका गुहा में उत्कीर्ण है। मंदिर के समीप ही एक प्राकृतिक कुण्ड है, जिसे पातालगंगा कहा जाता है। यह बराबर पर्वत सम्पूर्ण भारत का सांस्कृतिक पीठ रहा है,जहॉ प्राचीन काल में अनेक सम्प्रदाय के ऋषि–मुनि वास करते थे द्य इन्हीं ऋषि–मुनियों के निवास के लिए सम्राट अशोक ने कई गुफाएँ बनवायी थी। अशोक के पौत्र दशरथ ने भी गुफाएँ बनवायी थी तथा मौखरि राजाओं ने भी गुफाएँ बनवाकर मुनियों के निवास के लिए दान में दी थी।

बराबर पहाड़ के दक्षिणी भाग में और फल्गु नदी के वामपार्श्व में काले पत्थरों की कई गुफाएँ हैं, जिनमें "कर्ण चउमर" नामक गुफा सबसे बड़ी है। इसे आजकल "कर्ण झोपडी'' कहा जाता है। इसमें उत्कीर्ण अभिलेख से पता चलता है कि इसे अपने राज्यारोहण के बारहवें वर्ष में अशोक ने बनवाकर आजीवक संप्रदाय के साधुओं के लिए दान कर दिया था। इसी तरह यहाँ सुदामा गुफा है, जिसका नाम ''सुप्रिया" गुफा था। इसी प्रकार लोमश, विश्वामित्र झोपड़ी आदि सात गुफाएँ अशोक द्वारा निर्मित हैं और प्रत्येक में अभिलेख खुदे हैं। इसके बाद मुस्लिम शासन काल में हाजी हुरमैन नामक फकीर ने यहाँ अपना आश्रय बनाया और उसके शिष्यों ने यहाँ 260 चेले स्थापित किये थे। हाजी हुरमैन के पौत्र कुतुबन की यादगार में यहाँ "कुतुबन चक'' नामक गाँव बसा है। इनके वंशधर "बलियारीश और 'सोहोश ग्राम आज भी हैं, जो मुसलमानों के गुरू घराने माने जाते हैं।

नागार्जुनी पहाड़ी की घाटी में 'गुनमती' नामक आश्रम था, जिसका उल्लेख हवेनसांग ने किया है। इसी स्थान से साढ़े तीन मील दूर नैऋत्य कोण में शीलभद्ग का कौआडोल पर्वत वाला आश्रम स्थित 5 है। बराबर पर्वत के समीप फल्गु की एक शाखा के तट पर चन्द्रडीहा ग्राम है, जहाँ, मौखरि वंशके राजा चन्द्रसेन का गढ़ था। इसकी भुतही शाखा के किनारे मुरगवां ग्राम में जगदम्बा की एक विशाल मूर्ति है, जो बहुत ही प्रसिद्ध है। फल्गु के मोहाने शाखा के तट पर ही "लाटश और "दक्धु" नामक ग्राम हैं। दक्धु नामक ग्राम के बारे में बुकानन नामक अंग्रेज ने इसे देखकर । 7 5 वर्ष पूर्व कहा – यहाँ एक साथ पॉच मंदिर हैं। उत्तर

वाले मंदिर के पास मिट्टी के किले का धवंसावशेष भी हैं। एक मंदिर का नाम पार्श्वनाथ था, जो वस्तुत बौद्ध मंदिर है पार्श्वनाथ मंदिर और बगीचे के मध्य में अनेक प्रस्तर प्रतिमाएँ बिखरी पड़ी हैं। एक खंडित मूर्ति थी, जो नृत्य की मुद्रा में थी और जिसका एक पैर बैल की पीठ पर तथा दूसरा पाद पीठ पर आसीन था द्य इस मूर्ति की कई भुजाएं थीं।लोग इसे पशुपतिनाथ महादेव कहते थे।यह मूर्ति कवच पहनी एक स्त्री–मूर्ति से संयुक्त भी थी। स्त्री के हाथ शस्त्रों से रहित थे, एक हाथ में 'कठताल' लिये हुए थी। निश्चय ही पार्वती से युक्त नटराज शिव की यह मूर्ति है, जिसका मस्तक टूट गया है। एक शिवलिंग के चारों तरफ चार सिर हैं, जो नेपाल के पशुपतिनाथ महादेव की मूर्ति से मिलती–जुलती है। पार्श्वनाथ मंदिर के पश्चिम में दक्षिण से उत्तर की ओर पंक्ति में चार मंदिर खड़े हैं। इनमें दो मंदिर कन्हैया के थे, जिनमें लक्ष्मीनारायण और वासुदेव की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं। इस मंदिर के दक्षिण में सूर्य का मंदिर है। यह मंदिर बहुत ही प्राचीन है।

इस प्रकार फल्गु की शाखा नदी मोहाने का तट भी मगध संस्कृति का मुख्य जनक रहा है। ये सभी मंदिर मौखरियों के शासन–काल के माने जाते हैं तथा ये सभी देवायतन उसी काल के थे। इसी मोहाने के तट में औंगारी ग्राम भी हैं, जो एकंगरसराय थाने में है। यहाँ छठ व्रत का बड़ा भारी मेला लगता है। सूर्य सरोवर के चारों ओर कई देव–मंदिर हैं। मुख्य मंदिर की सूर्य प्रतिमा भी सात अश्वों वाले रथ पर आरूढ़ है। यहाँ विष्णु नामक सूर्य मूर्ति भी है, जो वासुदेव कहलाती है। सरोवर के पश्चिमी किनारें एक नागनाथ नामक स्थान है, जहाँ अनेक मूर्तियाँ रखी हुई थी। इनमें हरगौरी, गणेश तथा है, जहाँ अनेक मूर्तियाँ रखी हुई थी। इनमें हरगौरी, गणेश तथा बोधिसत्वों की प्रतिमाएँ उल्लेखित थी। गाँव भीतर जगदम्बा की प्रतिमा भी दर्शनीय है। यहाँ मकरासीन गंगा, सरस्वती एवं गौर शेर की मूर्तियाँ तो आज भी विद्यमान है। यहाँ चतुर्भुजी पार्वती की मूर्ति गणेश को गोद में लिये बैठी हुई है।इस प्रकार श्औंगारीश स्थान भी एक सांस्कृतिक पीठ है, जिसकी स्थापना फल्गु की उपचार नदी मोहाने की है देन कहा जा सकता है।

निष्कर्षः–फल्गु नदी बिहार राज्य में बहने वाली प्रमुख नदियों में एक है जो प्राचीन काल से ही इसका महत्वपूर्ण स्थान है। यह नदी बिहार राज्य की ही नहीं बल्कि भारत की भी सांस्कृतिक पहलुओं को जोड़े रखने में सहायक रही है। यह नदी विभिन्न संस्कृतियों का संगम है। वर्तमान समय में फल्गु नदी अपने सांस्कृतिक वैभव हेतु जानी जाती है। सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक दृष्टिकोण से भी फल्गु महत्वपूर्ण मानी गई है जो गया जिले को एक विशेष पहचान दिलाने में सक्षम है। भौगोलिक दृष्टिकोण से फल्गु नदी विभिन्न उपधाराओं में बहती हुई अपनी एक सतत पहचान गया से ही प्रारंभ करती है। यह नदी सांस्कृतिक दृष्टिकोण के अलावे

भौगोलिक जैसे–कृषि, सिंचाई, पशुपालन, जनसंख्या, अधिवास इत्यादि को साथ संजोये रखने में सहायक है।

संदर्भ सूचीः

1 मो० अताउललाह – बिहार का आधुनिक भूगोल ।
2 राव एवं सिंह – बिहार का भौगोलिक स्वरूप ।
3 हुसैन, माजीद – भौगोलिक विचारधारा।
4 शर्मा, रामशरण – प्राचीन भारत का इतिहास ।
5 थापर, रोमिला – अशोक का साम्राज्य ।
6 प्रतियोगिता दर्पण (अतिरिक्तांक) –प्राचीन भारत का इतिहास ।
7 भूगोल और आप पत्रिका।
8 योजना।
9 कुरूक्षेत्र।
10 बिहार राज्य द्वारा प्रकाशित पर्यटक विशेषांक का संकलन।
11 विभिन्न समाचार पत्रों का संकलन।